OM 17 EDITED_Page 1 and 2 11-11-2014 15:47 Page 11

सितारगंज-उत्तराखण्ड। सांसद भगत सिंह कोश्यारी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सरोज। साथ हैं ब्र.कु. तिलकराज तथा अन्य।

हाजीपुर-बिहार। वैशाली जिला के डी.एम. विनोद सिंह गुजियाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.आरती।

मोहनिया-कैमुर(बिहार)। विधायक एम.आर. निरंजन राम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. फूलकुमारी तथा ब्र.कु. रम्भा।

उन्नाव-(उ.प्र.)। ''राजयोग द्वारा क्रोध निवारण एवं सकारात्मक चिन्तन से सफल व सुरक्षित यात्रा'' कार्यक्रम के अवसर पर हिन्दुस्तान पेट्रोलियम के प्रबन्धक नितिन श्रीवास्तव को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता। साथ हैं ब्र.कु.कविता, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

मेरठ। 'तनावमुक्त जीवन शैली' शिविर में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. सुतीश, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. अल्का, ब्र.कु. मोतीलाल तथा अन्य

वामरा-ओडिशा। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में विधायक रवि नारायण नायक, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु.तपन, मीडिया कर्मी तथा अन्य।

अवसर को भाग्य में बदलें

- ब्र.कु. शोभिका,शांतिवन

''देखना जो चाहते हो इनकी उड़ान को
करना पड़ेगा ऊँचा और आसमान को''

सचमुच यदि युवाओं की उड़ान कितनी ऊंची है ये हम देखना चाहते हैं तो आसमान का कद और ऊँचा करना पड़ेगा क्योंकि युवा शक्ति हर ऊंचाई को पार कर सकती है। युवा देश का भविष्य हैं वही सबका सहारा हैं। यदि देश को विकसित बनाना है तो पहले युवाओं की बुद्धि का विकास करना होगा। उनमें नैतिक मूल्यों की धारणा पर बल देना होगा। ये नैतिक मूल्य उनमें बचपन से ही डाले जाने चाहिए जब उनका मन-मस्तिष्क एक कोरे कागज की तरह होता है जिसपर हम जो रंग डालना चाहें डाल सकते हैं फिर भविष्य में उन्हीं रंगों की आकृति उभर कर आयेगी। युवा का मतलब ही है हमारा आज और आने वाला कल। आज यदि युवा सही मार्ग पर अग्रसर है तो देश की उन्नति है और यदि आज उन्नति है तो भविष्य तो उन्नत हो ही जायेगा। केवल आवश्यकता है उनकी योग्यताओं को सही दिशा देने और उनका मार्ग प्रशस्त करने की। उनमें सभी शक्तियों का संचार करने की जिससे वे मार्ग में आने वाली बाधाओं से हार खाकर या डरकर बैठ न जाएं। साथ ही उनमें एकाग्रता की शक्ति का विकास अति आवश्यक है। एकाग्रता के बिना कोई कार्य संभव नहीं है। यदि हम अपनी एकाग्रता की शक्ति को कई प्रकार के कार्यों में उलझाते रहते हैं तो अंततः कोई भी कार्य सफलता के साथ नहीं कर सकते। आवश्यकता है कि हम अपना ध्यान सभी अनावश्यक बातों से हटाकर उसी बात पर केन्द्रित करें जो हम करना चाहते हैं अन्यथा हमारी शक्ति का बिखराव होता रहेगा और हम किसी भी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पायेंगे। आजकल देखा जाता है कि अनगिनत युवा किसी खास क्षेत्र में निपुणता प्राप्त करने से पहले ही हिम्मत हार बैठते हैं और दूसरे क्षेत्र में अपनी किस्मत आजमाने की ओर बढ़ जाते हैं। कितना सरल है अपने क्षेत्र में कांटे और दूसरे के क्षेत्र में गुलाब देखना। उदाहरण के तौर पर, जब कोई युवा किसी एक्टर को गाड़ी में बैठकर आते-जाते देखता है तो सोचता है कि एक्टर का जीवन कितना आरामदायक और ऐशो-आराम से भरा है। वह अपने भाग्य को कोसने लगता है कि उसे ऐसा चमक-दमक वाला पेशा क्यों नहीं मिला या उसका पेशा ही इतना उबाऊ क्यों है? उसे अपना पेशा ही सबसे कठिन लगता है। वह उन वर्षों के बारे में नहीं सोचता जब एक्टर बनने से पहले उस व्यक्ति ने किस प्रकार अथक परिश्रम करके यह स्थान प्राप्त किया। आज जब वह अपने व्यवसाय में निपुण हो गया है जहाँ उसकी क्षमता उसे लाभ पहुँचाने लगती है, उसका पेशा आकर्षक दिखने लगता है लेकिन इस स्थान तक पहुँचने के लिए उसने जो संघर्ष किया उसे भूल जाते हैं।

अपने जीवन को स्थिरता और दिशा देना कोई सरल काम नहीं है। लेकिन निरुद्देश्य जीवन बेकार ओर खोखले सपनों में नष्ट हो जाता है, यह भी निश्चित है। जिस काम को हमेशा अनिच्छा और निरूद्देश्य भाव के साथ करते हैं, वह हमारे लिए एक सज़ा बन जाता है, और ऐसा काम ठीक से होता भी नहीं जिसमें उत्साह न हो। एक महान उद्देश्य ही जीवन को अर्थ देता है। यह हमारी शक्तियों को एकीकृत करता है, उन्हें एक-दूसरे से जोड़ता है, और जो अब तक बिखरा हुआ और निर्बल था, वह मजबूत और एकीकृत दिखने लगता है।

कितना विलक्षण लगता है यह देखना कि एक नौजवान तमाम मुश्किलों को चीरते और दूसरों को पराजित कर देने वाली बाधाओं को जीतते हुए सीधे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ा जा रहा है। विरोध उसके प्रयासों को और बढ़ा देता है, परिस्थितियां उसे और शक्तिशाली बनाती हैं। बीमारी, गरीबी, आलाचकों का समूह कुछ भी उसके मार्ग में आ जाए वह लक्ष्य से अपनी नज़रें नहीं हटाता। आलोचकों के शब्दों का असर उस पर वैसा ही होता है जैसे तूफान का बाज पर होता है। तूफान के झोंकों से बाज और ऊँचा उठ जाता है। जीवन में आगे बढ़ाने वाले संघर्षों या प्रयासों में वह शान्ति और गरिमा है, कि उनसे हमें शक्ति ही मिलती है, भले ही हम उस स्थान पर न पहुँच पाएं, जहाँ पहुँचना चाहते हैं या वह पुरस्कार न पा सकें जो पाना चाहते हैं।

युवाओं की प्रगति में दूसरी आवश्यकता है दृढ़ता की। दृढ़ता चरित्र का वह गुण है जो व्यक्ति को उसके उद्देश्यों से न टलने की मजबूती देता है और उसके लक्ष्य को सदैव उसके सामने केन्द्रित रखता है। दृढ़ व्यक्ति की उपस्थिति ही नियंत्रण और आदेश पालन की सूचक होती है। उसे अपने समर्पण की घोषणा नहीं करनी पड़ती, क्योंकि उसकी दृढ़ता उसके कर्म से साफ झलकती है। जीवन की अधिकांश विफलताएं दृढ़ता के अभाव के कारण ही मिलती हैं। किसी भी युवा के लिए यह बहुत बुरा है कि वह कमज़ोर और दुविधापूर्ण मनःस्थिति के साथ किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करे। उसमें आत्मविश्वास के साथ कुछ भी करने का साहस नहीं होता और वह उतार-चढ़ाव का शिकार हो जाता है।

युवाओं के समक्ष जीवन में कई अवसर आते हैं लेकिन आवश्यक है उसे पहचानना। पहचानकर उसमें सुधार करना पड़ता है और उसे अपने कार्य के अनुकूल बनाना पड़ता है। अवसरों का अन्त नहीं, भाग्य को पलट देने वाली घटनाओं की कोई कमी नहीं। कमी है तो केवल दृढ़ लगन से कार्य में जुट जाने की।

एक व्यक्ति एक आर्ट गैलरी में घुसा। उसने वहाँ अनेक चित्र देखे। एक चित्र में मूर्ति का चेहरा बालों से बुरी तरह ढ़का हुआ था और उसके पैरों में पंख लगे हुए थे।

दर्शक ने पूछा-यह चित्र किसका है? चित्रकार ने उत्तर दिया-यह अवसर का चित्र है। इसका मुँह क्यों छिपा रखा है? उत्तरः क्योंकि जब वह मनुष्यों के सामने आता है तो वो इसे पहचान नहीं पाते। इसके पैरों में पंख क्यों लगे हैं? उत्तरः यह बहुत जल्दी चला जाता है, एक बार यह हाथ से निकल जाए तो फिर इसे कोई पकड़ नहीं सकता।

जो लोग अवसरों का उपयोग नहीं कर सकते या उसका उपयोग करना नहीं चाहते, वे भविष्य में भी उसका उपयोग नहीं कर पायेंगे। इसलिए आज सभी का कर्त्तव्य बनता है कि युवाओं को इस योग्य बनाएं कि वे अवसरों की पहचान कर सकें और अपने जीवन को सही मार्ग पर ले जा सकें। यदि उनमें बचपन से ही इस योग्यता का विकास कर दिया जाये तो वे अपने जीवन में आने वाले सुनहरे अवसरों का लाभ उठा पायेंगे और अपना तथा देश का भविष्य उज्ज्वल बना पायेंगे। आवश्यक बातों की पहचान करने के लिए अपनी बुद्धि को अनावश्यक एवं व्यर्थ बातों से खाली रखना पड़ेगा। यदि हमारी बुद्धि में अनावश्यक बातें ही भरी रहेंगी तो हम आवश्यक बातों पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पायेंगे और इन सब में फंसकर अपने लक्ष्य से भटक जायेंगे। कितने ही युवाओं का हम उदाहरण देखें तो उनकी सफलता का आधार उनकी एकाग्रता और दृढ़ निश्चय शक्ति ही थी। विवेकानंद की हम बात करते हैं, बच्चों को उनके बारे में पढ़ाते हैं लेकिन आवश्यकता है उन्हें उनके जैसा जीवन बनाने की प्रेरणा देना। कहीं ऐसा न हो कि यह सब केवल पढ़ने और सुनने तक ही सीमित रह जाये बल्कि इसे धारण करना होगा तभी हम देश को कई विवेकानंद दे पायेंगे और ऐसे युवा-शक्ति के संगठन द्वारा ही धरती को फिर से स्वर्ग बना पायेंगे।

माउण्ट आबू- पाण्डव भवन।

आपने बैंगलोर से परमात्म ज्ञान प्राप्त किया। आपकी विशेषता देख दादीजी ने आपको मधुबन सेवा के लिए बुला लिया। वे सबको खुश करते थे इसलिए सबके प्यारे थे। स्वामी भाई जो कि महायज्ञ में कारपेन्ट्री डिपार्टमेंट में 44 वर्षों से समर्पित रूप से सेवाओं को संभाल रहे थे। कारपेन्ट्री डिपार्टमेंट में तीनों स्थान पर बहुत ही ज़िम्मेवारी से कार्य देख रहे थे। आपको डायबिटीज़ की बीमारी थी। चार मास पूर्व आपको हाई डायबिटीज़ होने से आप कोमा में चले गये । आप 4 नवम्बर -2014 को अपना पुराना शरीर त्याग कर विशेष परमात्म कार्य के लिए अग्रसर हो गये।

Good News for Android users, now
Om Shanti Media is available on Android
ओमशान्ति मीडिया
ANDROID APP ON Google play

ओमशांति मीडिया अब एनड्रोइड पर उपल्बध है। आप गूगल प्ले करें।

लिंक-
https://play.google.com/store/apps/details?id=app.bk.osm.OmShantiMedia

... तुम वही हो जाओ, ...

- पेज 2 का शेष ...

जाती है-आई मौत, यही आई मौत; जीवन गया, गया- और कुछ हो न पाये; पता नहीं क्या लेकर आये थे, समझ में ही नहीं आया, पता नहीं क्यों आये थे, क्यों भेजे गये थे, कुछ प्रतीती न हुई, गीत अनगाया रह गया, फूल अनखिला रह गया।

सुनो उसकी आवाज़ और सभी आवाज़ें उसकी है, सुनने की कला चाहिए, गुनो उसे, क्योंकि सभी को उसने की बनाया है, गुनने की कला चाहिए। जागते-सोते, उठते-बैठते एक ही स्मरण रहे कि आप परमात्मा से घिरे हो। शुरु-शुरु में चूक-चूक जायेगा, भूल-भूल जायेगा, विस्मृति हो जायेगी, पर अगर आप धागे को पकड़ते ही रहे, तो जैसा महान आत्मायें कहते हैं, आप फूलों के ढ़ेर न रह जाओगे, वही श्रुति का धागा तुम्हारे फूलों की माला बना देगा। जिस दिन आपकी माला तैयार है, वह खुद ही झुक आता है, वह अपनी गरदन तुम्हारी माला में डाल देता है। क्योंकि उस तक, उसके सिर तक हमारे हाथ तो न पहुंच पायेंगे। बस, हमारी माला तैयार हो, वह खुद हम तक पहुंच जाते हैं। मनुष्य कभी परमात्मा तक नहीं पहुंचता। जब भी मनुष्य तैयार होता है, परमात्मा उसके पास आता है।

हे कलियाँ, जो तुम होने आये हो, जो तुम होना चाहते हो, जो तुम हो, उसे उघाड़ना है, परमात्मा को प्रेम के धागे में अपने इर्द-गिर्द पाना है। यही समय है आत्म और परमात्म मिलन का। उस वक्त को, उस क्षण को पकड़ लेना है।